

# CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/7/1 - Compartment

## Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

### सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पटकथा में गाँवों की अहम् भूमिका है। बदलते समय के साथ, “डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था” एक नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है। यह व्यवस्था न केवल तकनीकी विकास का संकेत है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का भी माध्यम है।

डिजिटल इंडिया मिशन के तहत अब ग्राम पंचायतों में इंटरनेट सुविधाएँ, डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। किसान अब मोबाइल ऐप्स की सहायता से मौसम की जानकारी, फ़सल बीमा योजनाएँ और बाज़ार के दाम जान सकते हैं। इससे उनकी निर्भरता बिचौलियों पर कम हो गई है।

ग्राम स्तर पर ई-गवर्नेंस ने पारदर्शिता बढ़ाई है। जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाएँ और सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाएँ अब ऑनलाइन हो गई हैं। हालाँकि चुनौतियाँ अब भी हैं – जैसे डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति, फिर भी यह बदलाव धीरे-धीरे ग्रामीण जीवन को सशक्त बना रहा है। यदि सही दिशा में प्रयास जारी रहे, तो डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर कर सकती है।

[10 अंक]

1(i). गद्यांश में ग्रामीण भारत के हृदय में नवीन विकास के संकेत का प्रतीक किसे कहा गया है ?

[1 अंक]

- (A) तकनीकी विकास की व्यवस्था
- (B) सामाजिक विकास की व्यवस्था
- (C) आर्थिक विकास की व्यवस्था
- (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था

**सही उत्तर:** (D) डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था

**हल:**

**अवधारणा:**

- गद्यांश के कथ्य को पहचानने के लिए लेखक द्वारा प्रयुक्त मुख्य पद को आधार बनाना चाहिए।
- किसी व्यवस्था के लाभ और उस व्यवस्था के नाम में अंतर होता है।

**चरण 1: मुख्य पद पहचानें** पहले अनुच्छेद में लेखक ने स्पष्ट कहा है कि बदलते समय के साथ “डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था एक नई दिशा का प्रतीक बन चुकी है। प्रश्न इसी नवीन विकास के संकेत का नाम पूछता है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों को जाँचें** विकल्प (A) तकनीकी विकास, (B) सामाजिक विकास और (C) आर्थिक विकास इस व्यवस्था के पहलू हैं। लेखक का कथन इन पहलुओं से व्यापक है; इसलिए इनमें से कोई उस पूरी व्यवस्था का सटीक नाम नहीं देता।

**चरण 3: निष्कर्ष** ग्रामीण भारत के हृदय में नवीन विकास के संकेत का प्रतीक डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था है। अतः सही विकल्प (D) है।

**त्वरित सुझाव:** प्रश्न में “प्रतीक जैसे शब्द हों तो गद्यांश में उसी शब्द के निकट प्रयुक्त मुख्य संज्ञा खोजें।

1(ii). डिजिटल व्यवस्था से किसानों को क्या लाभ हुआ है ?

[1 अंक]

- (A) कर देने में सुविधा होना
- (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना
- (C) अनाज भंडारण की सुविधा होना
- (D) मज़दूरी में वृद्धि होना

**सही उत्तर:** (B) बिचौलियों पर निर्भरता कम होना

**हल:**

**अवधारणा:**

- गद्यांश में बताए गए प्रत्यक्ष लाभ के आधार पर उत्तर चुनना चाहिए।
- किसानों को सूचना की सीधी उपलब्धता और बिचौलियों पर निर्भरता में कमी का संबंध पहचानना आवश्यक है।

**चरण 1: किसानों का लाभ खोजें** दूसरे अनुच्छेद में बताया गया है कि किसान मोबाइल ऐप्स से मौसम, फसल बीमा और बाज़ार के दाम की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसके तुरंत बाद कहा गया है कि इससे उनकी निर्भरता बिचौलियों पर कम हो गई है।

**चरण 2: विकल्पों की तुलना करें** विकल्प (B) गद्यांश में व्यक्त लाभ को सीधे प्रस्तुत करता है। कर देने की सुविधा (A), अनाज भंडारण (C) और मज़दूरी में वृद्धि (D) का उल्लेख किसानों के इस लाभ के रूप में नहीं किया गया है।

**चरण 3: निष्कर्ष** डिजिटल व्यवस्था से किसानों की बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई है। अतः सही विकल्प (B) है।

**त्वरित सुझाव:** गद्यांश में “इससे के बाद आने वाला वाक्य अक्सर उससे पहले बताई गई सुविधा का परिणाम स्पष्ट करता है।

**1(iii). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**

कथन I : ई-गवर्नेंस सिस्टम में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ हैं।

कथन II : ई-गवर्नेंस सिस्टम में पारदर्शिता के कारण सरकारी जानकारी एवं सेवाओं तक नागरिकों की पहुँच में वृद्धि हुई है।

कथन III : ई-गवर्नेंस सिस्टम ग्रामीण भारत को आधुनिक और सशक्त बना रहा है।

कथन IV : ई-गवर्नेंस सिस्टम समय और धन का अपव्यय करता है।

[1 अंक]

(A) केवल कथन I और IV सही हैं।

(B) केवल कथन III और IV सही हैं।

(C) केवल कथन II और III सही हैं।

(D) केवल कथन I और II सही हैं।

**सही उत्तर:** (C) केवल कथन II और III सही हैं।

**हल:**

**अवधारणा:**

- कथनों का सत्यापन गद्यांश के आधार पर करना है; बाहरी सामान्य जानकारी जोड़ना उचित नहीं है।
- ई-गवर्नेंस के संबंध में पारदर्शिता, सेवाओं तक पहुँच और ग्रामीण सशक्तिकरण मुख्य प्रमाण हैं।

**चरण 1: कथन II और III जाँचें** गद्यांश में ई-गवर्नेंस से पारदर्शिता बढ़ने तथा जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन और अन्य सेवाओं के ऑनलाइन होने की बात है। ग्रामीण जीवन के सशक्त होने का भी उल्लेख है। इसलिए कथन II और III समर्थित हैं।

**चरण 2: कथन I और IV तथा विकल्प जाँचें** सुरक्षा संबंधी चिंताओं का गद्यांश में उल्लेख नहीं है, इसलिए कथन I समर्थित नहीं है। समय और धन के अपव्यय वाला कथन IV भी गद्यांश के सकारात्मक कथ्य के विपरीत है। (A) और (B) में IV तथा (D) में I होने से वे सही नहीं हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** केवल कथन II और III सही हैं। अतः सही विकल्प (C) है।

**त्वरित सुझाव:** कथन चुनते समय प्रत्येक कथन के लिए गद्यांश में प्रमाण खोजें; केवल सामान्य जीवन में संभव होने से कथन सही न मानें।

**1(iv). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?**

[1 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- प्रमुख उद्देश्य जानने के लिए गद्यांश के केंद्रीय भाव और अंतिम निष्कर्ष को साथ पढ़ना चाहिए।
- डिजिटल सुविधाएँ साधन हैं और ग्रामीण समाज का सशक्तिकरण उनका व्यापक लक्ष्य है।

**चरण 1: व्यवस्था का व्यापक लक्ष्य पहचानें** आरंभ में डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि उद्देश्य सुविधाएँ देना भर नहीं, ग्रामीण जीवन को सशक्त बनाना भी है।

**चरण 2: अंतिम कथन से पुष्टि करें** अंतिम वाक्य में भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर करने की बात कही गई है। यही कथन इस व्यवस्था के दीर्घकालीन उद्देश्य को स्पष्ट करता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण जीवन का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण कर भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी समाज की ओर अग्रसर करना है।

**त्वरित सुझाव:** “प्रमुख उद्देश्य के उत्तर में सुविधाओं की सूची के स्थान पर उनसे प्राप्त होने वाला व्यापक सामाजिक लक्ष्य लिखें।

### 1(v). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था से ग्राम पंचायतों में कौन सी सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- सेवाओं की सूची गद्यांश के संबंधित अनुच्छेदों से लेनी चाहिए।
- डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था में संचार, भुगतान, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा प्रशासनिक सेवाएँ सम्मिलित हैं।

**चरण 1: बुनियादी डिजिटल सेवाएँ पहचानें** डिजिटल इंडिया मिशन के तहत ग्राम पंचायतों में इंटरनेट सुविधाएँ और डिजिटल भुगतान प्रणाली उपलब्ध हो रही हैं। साथ ही ऑनलाइन शिक्षा तथा टेलीमेडिसिन सेवाएँ मिल रही हैं। ये क्रमशः सूचना-संपर्क, लेन-देन, पढ़ाई और दूरस्थ स्वास्थ्य सेवा से संबंधित सुविधाएँ हैं।

**चरण 2: ऑनलाइन प्रशासनिक सेवाएँ जोड़ें** गद्यांश में ग्राम स्तर पर ई-गवर्नेंस के अंतर्गत जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाओं तथा सरकारी सब्सिडी जैसी सेवाओं के ऑनलाइन होने का भी उल्लेख है। इसलिए उत्तर में मूल सुविधाओं के साथ इन प्रशासनिक सेवाओं को जोड़ने से गद्यांश का पूरा तथ्य सामने आता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** ग्राम पंचायतों में इंटरनेट, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाएँ उपलब्ध हो रही हैं। जन्म प्रमाण-पत्र, भूमि रजिस्ट्रेशन, पेंशन योजनाओं और सरकारी सब्सिडी की सेवाएँ भी ऑनलाइन हो गई हैं।

**त्वरित सुझाव:** सेवाएँ पूछे जाने पर गद्यांश में दिए नाम क्रम से लिखें; इंटरनेट, शिक्षा, स्वास्थ्य और ई-गवर्नेंस की सूची अलग पहचानें।

### 1(vi). किसानों को डिजिटल तकनीक के तहत मोबाइल ऐप के माध्यम से किन-किन सुविधाओं की प्राप्ति हो रही है ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- किसानों से संबंधित उत्तर उसी अनुच्छेद से लेना चाहिए जिसमें मोबाइल ऐप्स का उल्लेख है।
- प्राप्त सुविधाओं और उनके परिणाम को अलग-अलग पहचानने से उत्तर स्पष्ट और पूर्ण बनता है।

**चरण 1: तीनों सुविधाएँ खोजें** गद्यांश के अनुसार किसान मोबाइल ऐप्स की सहायता से मौसम की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वे फ़सल बीमा योजनाओं के बारे में जान सकते हैं और बाज़ार में फ़सल के दाम की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं। प्रश्न में “किन-किन कहा गया है, इसलिए इन तीनों सुविधाओं को शामिल करना आवश्यक है।

**चरण 2: जानकारी के लाभ को स्पष्ट करें** सूचना सीधे मोबाइल पर मिलने का गद्यांश में बताया गया परिणाम बिचौलियों पर निर्भरता कम होना है। इसे मुख्य सूची के बाद लिख सकते हैं। ग्राम पंचायतों की ऑनलाइन शिक्षा या टेलीमेडिसिन को यहाँ किसानों के मोबाइल ऐप की सूची में जोड़ना उचित नहीं होगा, क्योंकि प्रश्न विशेष रूप से ऐप से प्राप्त सुविधाएँ पूछता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** किसानों को मोबाइल ऐप्स से मौसम की जानकारी, फ़सल बीमा योजनाओं की सूचना और बाज़ार के दाम जानने की सुविधा मिल रही है। इससे उनकी बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई है।

**त्वरित सुझाव:** मोबाइल ऐप वाला वाक्य पढ़कर तीन पद रेखांकित करें—मौसम, फ़सल बीमा और बाज़ार के दाम; फिर उनका परिणाम लिखें।

### 1(vii). डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था को सफल बनाने में कौन-सी मुख्य चुनौतियाँ हैं ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- चुनौतियाँ पहचानने के लिए गद्यांश के उस अंश को पढ़ना चाहिए जिसमें व्यवस्था की सीमाएँ बताई गई हैं।
- डिजिटल व्यवस्था की सफलता के लिए उपयोग का ज्ञान, इंटरनेट की गति और विद्युत आपूर्ति तीन आवश्यक आधार हैं।

**चरण 1: ज्ञान से जुड़ी चुनौती पहचानें** गद्यांश में पहली चुनौती डिजिटल साक्षरता की कमी बताई गई है। डिजिटल सुविधाओं का उपयोग करने का पर्याप्त ज्ञान न होना उनके प्रभावी उपयोग में बाधा है। यह चुनौती सुविधा उपलब्ध होने के साथ उसके उपयोग की समझ की आवश्यकता को सामने लाती है।

**चरण 2: तकनीकी और आधारभूत बाधाएँ पहचानें** गद्यांश में इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति को भी मुख्य चुनौतियाँ कहा गया है। धीमा इंटरनेट ऑनलाइन सेवाओं के सहज उपयोग में बाधक है, जबकि अनियमित बिजली डिजिटल कार्यों की निरंतरता को प्रभावित करती है। उत्तर में इन्हीं स्पष्ट रूप से उल्लिखित समस्याओं को प्रस्तुत करना चाहिए।

**चरण 3: निष्कर्ष** डिजिटल ग्रामीण व्यवस्था की मुख्य चुनौतियाँ डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की अनियमित आपूर्ति हैं। ये बाधाएँ डिजिटल सेवाओं के प्रभावी और नियमित उपयोग को कठिन बनाती हैं।

**त्वरित सुझाव:** गद्यांश में “चुनौतियाँ और “जैसे के बाद दिए गए पद खोजें; बाहरी समस्याएँ जोड़ने के बजाय उन्हीं तीन बाधाओं को लिखें।

2. जीवन एक संग्राम है, मत समझो यह विश्राम है,  
हर दिन नई चुनौती है, हर पल एक इम्तहान है।  
सुख-दुख की इस बगिया में, फूलों के संग काँटे भी हैं,  
जो साहस से चलना सीखे, वही असली विजेता है।  
आँधियाँ आएँगी राहों में, बाधाएँ मिलेंगी हर मोड़ पर,  
मन को डगमगाने मत देना, विश्वास रखो अपने ज़ोर पर।  
हर असफलता एक सीख है, हर गिरना है एक सबक,  
जो गिरकर फिर उठते हैं, वही होते हैं असल में मज़बूत।  
जीवन का यथार्थ यही है, संघर्ष ही सबसे बड़ा धर्म,  
कभी मत रुकना इस राह में, चलो निरंतर, यही है कर्म।  
मंजिल मिलेगी निश्चित ही, अगर इरादे पक्के हों,  
धैर्य और मेहनत का दीप जलाओ –  
सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे।

[8 अंक]

### 2(i). जीवन को संग्राम क्यों कहा गया है ?

[1 अंक]

- (A) जीवन विश्राम का पर्याय है।  
(B) जीवन मुस्कान का अभिप्राय है।  
(C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है।  
(D) जीवन सफलता का पर्याय है।

**सही उत्तर:** (C) जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है।

**हल:**

**अवधारणा:**

- काव्यांश में जीवन के स्वरूप को समझने के लिए उसकी मुख्य बात और विकल्पों का संबंध देखना चाहिए।
- संग्राम का आशय कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करना है।

**चरण 1: काव्यांश का आधार** कवि कहता है कि हर दिन नई चुनौती और हर पल इम्तहान है। सुख के साथ दुख भी मिलते हैं। इसलिए मनुष्य को साहस बनाए रखकर बाधाओं से जूझना पड़ता है। यही जीवन को संग्राम कहने का आधार है।

**चरण 2: विकल्पों की जाँच** (C) में चुनौती और साहस दोनों हैं, इसलिए यह कथ्य के अनुकूल है। (A) गलत है क्योंकि कवि विश्राम मानने से रोकता है। (B) का मुस्कान पर केंद्रित अर्थ संघर्ष को व्यक्त नहीं करता। (D) केवल सफलता बताता है, जबकि कविता में असफलता और सीख भी हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** जीवन चुनौती और साहस का समन्वय है। अतः सही विकल्प (C) है।

**त्वरित सुझाव:** संग्राम शब्द के साथ चुनौती और साहस वाले पदों को जोड़कर विकल्प चुनें।

**2(ii). 'सपनों के पंख खुद-ब-खुद खुलेंगे' से अभिप्राय है :**

[1 अंक]

- (A) कामनाओं की पूर्ति
- (B) धन एवं वैभव की उपलब्धि
- (C) गंतव्य का मार्ग
- (D) लक्ष्यों की सिद्धि

**सही उत्तर:** (D) लक्ष्यों की सिद्धि

**हल:**

**अवधारणा:**

- प्रतीकात्मक कथन का अर्थ उसके पहले और बाद की पंक्तियों से स्पष्ट होता है।
- यहाँ सपने लक्ष्य हैं और पंख खुलना उनके साकार होने का संकेत है।

**चरण 1: प्रसंग से आशय पहचानना** कवि पक्के इरादों, धैर्य और मेहनत के सहारे मंजिल मिलने की बात करता है। इसलिए सपनों के पंख खुलने का आशय परिश्रम के फलस्वरूप लक्ष्य पूरे होना है। यह वास्तविक पंख खुलने का वर्णन नहीं है।

**चरण 2: विकल्पों में अंतर** (D) लक्ष्यों की सिद्धि कविता के मंजिल मिलने वाले भाव को सीधे व्यक्त करता है। (A) कामनाओं की पूर्ति व्यापक अर्थ रखता है, पर लक्ष्य और श्रम का संबंध उतना स्पष्ट नहीं करता। (B) में धन और वैभव की सीमा जोड़ दी गई है, जिसका कविता में उल्लेख नहीं है। (C) केवल मार्ग बताता है, उपलब्धि नहीं।

**चरण 3: निष्कर्ष** इस कथन का अभिप्राय लक्ष्यों की सिद्धि है। अतः सही विकल्प (D) है।

**त्वरित सुझाव:** रूपक का अर्थ चुनते समय उससे पहले की मेहनत और मंजिल वाली पंक्तियाँ पढ़ें।

**2(iii). कविता के केंद्रीय भाव को दर्शाने वाला/वाले कथन है/हैं :**

- I. संघर्ष ही जीवन है।
- II. आनंद ही जीवन है।
- III. शांति ही जीवन है।

[1 अंक]

- (A) केवल I
- (B) केवल II
- (C) केवल III
- (D) I और II दोनों

**सही उत्तर:** (A) केवल I

**हल:**

**अवधारणा:**

- केंद्रीय भाव वह मुख्य विचार है जो कविता के सभी उदाहरणों को जोड़ता है।
- कथनों की सत्यता का निर्णय संपूर्ण काव्यांश के आधार पर करना चाहिए।

**चरण 1: मुख्य विचार पहचानना** कवि जीवन को संग्राम कहता है और संघर्ष को सबसे बड़ा धर्म मानता है। आँधियाँ, बाधाएँ, असफलता से सीखना और फिर उठना सभी निरंतर संघर्ष के इसी संदेश को पुष्ट करते हैं। इसलिए कथन I कविता का केंद्रीय भाव है।

**चरण 2: शेष कथनों की जाँच** कथन II जीवन को केवल आनंद मानता है, जबकि कविता सुख के साथ दुख की उपस्थिति भी बताती है। कथन III की शांति यहाँ मुख्य विचार नहीं है; कवि निरंतर कर्म करने को कहता है। इसलिए (B), (C) और I के साथ II जोड़ने वाला (D), तीनों असंगत हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** केवल कथन I, संघर्ष ही जीवन है, केंद्रीय भाव व्यक्त करता है। सही विकल्प (A) है।

**त्वरित सुझाव:** केंद्रीय भाव के लिए बार-बार लौटने वाले संघर्ष और कर्म के संदेश को आधार बनाएँ।

**2(iv). काव्यांश के अनुसार जीवन क्या है ?**

[1 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- काव्यांश के अनुसार उत्तर देते समय कवि की जीवन संबंधी दृष्टि स्पष्ट करनी चाहिए।
- संग्राम का बिंब जीवन में आने वाली चुनौतियों और उनसे जूझने को दर्शाता है।

**चरण 1: जीवन का स्वरूप** कवि के अनुसार जीवन एक संग्राम है। इसमें हर दिन नई चुनौती आती है और हर पल परीक्षा जैसी स्थिति होती है। इसलिए जीवन को केवल विश्राम या सुख का अवसर समझना उचित नहीं है।

**चरण 2: बिंब का स्पष्टीकरण** कवि जीवन को ऐसी बगिया भी कहता है जिसमें फूलों के साथ काँटे हैं। इसका आशय है कि सुख और दुख साथ-साथ आते हैं। इन परिस्थितियों में साहस और विश्वास के साथ आगे बढ़ना ही जीवन का वास्तविक स्वरूप है।

**चरण 3: निष्कर्ष** काव्यांश के अनुसार जीवन सुख-दुख और चुनौतियों से भरा संग्राम है, जिसका सामना साहस से करना चाहिए।

**त्वरित सुझाव:** जीवन क्या है के उत्तर में पहले संग्राम लिखें, फिर सुख-दुख का संक्षिप्त संकेत दें।

## 2(v). कवि के अनुसार कौन-से व्यक्ति मजबूत होते हैं ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- यह प्रश्न बाहरी शक्ति के बजाय कठिनाइयों का सामना करने वाली मानसिक दृढ़ता को पहचानने का है।
- कवि असफलता से सीखकर पुनः प्रयास करने को वास्तविक मजबूती मानता है।

**चरण 1: कवि का प्रत्यक्ष कथन** कवि कहता है कि जो गिरकर फिर उठते हैं, वही वास्तव में मजबूत होते हैं। यहाँ गिरने का अर्थ जीवन में असफल होना या बाधा के कारण पीछे रह जाना है। फिर उठने का अर्थ निराशा में रुकने के बजाय अपनी शक्ति सँभालकर दोबारा प्रयास करना है। इस प्रकार मजबूती व्यक्ति के व्यवहार और उसके धैर्य से पहचानी जाती है।

**चरण 2: मजबूती के गुण समझना** ऐसे व्यक्ति हर असफलता को सीख और हर गिरावट को सबक मानते हैं। वे विपरीत परिस्थितियों में मन को डगमगाने नहीं देते और अपने सामर्थ्य पर विश्वास रखते हैं। बाधाएँ आने पर भी साहस से चलते रहना उनके दृढ़ संकल्प का प्रमाण है। कवि के अनुसार मजबूत वही है जो असफलता से हार मानने के बजाय अनुभव लेकर आगे बढ़े; केवल सफलता मिलते रहना मजबूती का मानदंड नहीं है।

**चरण 3: निष्कर्ष** कवि के अनुसार वे व्यक्ति मजबूत होते हैं जो असफलता से सीखते हैं, गिरकर फिर उठते हैं और साहस तथा आत्मविश्वास के साथ निरंतर प्रयास करते हैं।

**त्वरित सुझाव:** मजबूती का उत्तर गिरकर उठने, सीखने और फिर प्रयास करने के तीन जुड़े भावों से दें।

## 2(vi). कवि ने जीवन का यथार्थ किन्हें माना है ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- जीवन का यथार्थ समझने के लिए कविता की निष्कर्षात्मक पंक्तियों का आशय देखना चाहिए।
- कवि संघर्ष, निरंतर कर्म और सुख-दुख की स्वीकृति के माध्यम से जीवन की सच्चाई बताता है।

**चरण 1: जीवन की वास्तविक स्थिति** कवि ने जीवन में संघर्ष की अनिवार्यता को जीवन का यथार्थ माना है। जीवन में हर दिन नई चुनौती आती है और हर मोड़ पर बाधाएँ मिल सकती हैं। फूल और काँटे सुख-दुख के प्रतीक हैं; दोनों जीवन का हिस्सा हैं। इसलिए केवल सुविधा या विश्राम की आशा करना जीवन की वास्तविक स्थिति को समझना नहीं है। मनुष्य को कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ता है।

**चरण 2: यथार्थ से मिलने वाली प्रेरणा** संघर्ष को सबसे बड़ा धर्म कहकर कवि कठिनाइयों से जूझते रहने का महत्त्व बताता है। वह इस राह में न रुकने और निरंतर चलने को कर्म मानता है। असफलता से सीखना, अपने सामर्थ्य पर विश्वास रखना और धैर्यपूर्वक मेहनत करना इसी यथार्थ को स्वीकार करने के तरीके हैं। कविता का संदेश है कि दृढ़ इरादे और सतत परिश्रम से मंजिल मिलती है; इसलिए जीवन की कठिनाइयों के बीच प्रयास जारी रखना चाहिए।

**चरण 3: निष्कर्ष** कवि ने संघर्ष को जीवन का यथार्थ माना है। सुख-दुख और बाधाओं के बीच साहस, धैर्य तथा विश्वास के साथ निरंतर कर्म करते रहना ही जीवन की सच्चाई है।

**त्वरित सुझाव:** यथार्थ के उत्तर को संघर्ष वाली पंक्ति से शुरू करके निरंतर कर्म वाली पंक्ति से जोड़ें।

### 3(i). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

सोशल मीडिया से घिरा आज का मानव

[6 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, स्वतंत्र चिंतन और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति आवश्यक है। आरंभ पाठक को विषय से जोड़ता है और अंत कोई सार्थक विचार छोड़ता है।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में सोशल मीडिया के लाभ, उससे उत्पन्न व्यस्तता तथा संतुलित उपयोग की आवश्यकता को सहज भाषा में प्रस्तुत किया जा सकता है।

**चरण 1: स्वरूप और विषयवस्तु की योजना** पहले विषयानुकूल शीर्षक दें। आरंभ में मोबाइल से शुरू होते दिन का दृश्य रखें। फिर संचार और ज्ञान के लाभ बताते हुए आभासी संपर्क के कारण घटते पारिवारिक संवाद तथा तुलना की प्रवृत्ति पर विचार करें। अंत में समय के अनुशासित उपयोग का संदेश दें। रचनात्मक लेख को पत्र या समाचार का रूप देने की आवश्यकता नहीं है। लाभ और हानि के बीच तार्किक संबंध बनाए रखें, जिससे लेख बिखरे हुए बिंदुओं की सूची न लगे। भाषा में छोटे वाक्य और परिचित शब्द चुनें। अंतिम वाक्य आरंभ में उभरे मोबाइल के दृश्य को वास्तविक जीवन से जोड़कर लेख को पूर्णता देता है।

**चरण 2: पूरा नमूना लेख सोशल मीडिया से घिरा आज का मानव**

सुबह आँख खुलते ही मोबाइल की चमक चेहरे पर उतर आती है। संदेश, तस्वीरें और वीडियो मनुष्य को ऐसी दुनिया में खींच लेते हैं, जहाँ भीड़ बहुत है, पर अपनापन कम। सोशल मीडिया ने दूर बैठे लोगों को जोड़ा है; ज्ञान, अवसर और अपनी बात कहने का मंच भी दिया है। किंतु लगातार बजती सूचनाएँ हमारा समय और एकाग्रता चुरा रही हैं। भोजन की मेज पर बैठे परिवार में भी सबकी निगाहें अलग पर्दों पर टिकी रहती हैं। दूसरों की चमकती जिंदगी देखकर अपनी खुशियाँ छोटी लगने लगती हैं। जरूरत तकनीक छोड़ने की नहीं, उसका समय तय करने की है। कुछ घरे मोबाइल रखकर किसी अपने का हाल पूछें। जीवन की असली तस्वीर पर्दे के बाहर भी खिलती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** लेख सोशल मीडिया की उपयोगिता स्वीकार करते हुए उसके संयमित प्रयोग और वास्तविक मानवीय संबंधों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

**त्वरित सुझाव:** इस विषय में केवल नुकसान गिनाने के स्थान पर दैनिक जीवन का एक दृश्य, एक लाभ और संतुलित उपयोग का उपाय अवश्य जोड़ें।

### 3(ii). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

भारत की युवा शक्ति

[6 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रचनात्मक लेख विषय की मौलिक प्रस्तुति है। युवा शक्ति पर लिखते समय उत्साह और कल्पना के साथ शिक्षा, श्रम, जिम्मेदारी और सामाजिक योगदान को जोड़ना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में स्पष्ट आरंभ, परस्पर जुड़े विचार और प्रेरक अंत रखें। केवल प्रशंसा के बजाय युवाओं की क्षमता को सार्थक दिशा देने की आवश्यकता भी समझाएँ।

**चरण 1: स्वरूप और विचारों की योजना** शीर्षक के बाद युवा मन की ऊर्जा का बिंब देकर आरंभ करें। फिर विज्ञान, खेल, कृषि और समाजसेवा में युवाओं के योगदान की संभावनाएँ रखें। शिक्षा, कौशल तथा समान अवसरों की आवश्यकता को इन संभावनाओं से जोड़ें। अंत में प्रत्येक युवा के छोटे योगदान को देश की प्रगति से संबंधित करें। लेख में अप्रमाणित आँकड़े या नारे भरने के बजाय विषय का संतुलित विकास करें। भाषा आशावादी हो, लेकिन यह भी स्पष्ट रहे कि केवल आयु नहीं, अनुशासित परिश्रम और संवेदनशील व्यवहार ही युवा शक्ति को उपयोगी बनाते हैं। पत्र जैसा पता, संबोधन या हस्ताक्षर इस लेख में अपेक्षित नहीं है।

**चरण 2: पूरा नमूना लेख भारत की युवा शक्ति**

युवा मन उस नदी की तरह है, जिसे सही दिशा मिले तो वह जीवन सींच देती है। भारत के युवाओं की आँखों में सपने हैं और हाथों में उन्हें सच करने की क्षमता। वे प्रयोगशालाओं में खोज कर सकते हैं, खेतों में नई तकनीक ला सकते हैं और खेल के मैदान में देश का सम्मान बढ़ा सकते हैं। पर शक्ति केवल उत्साह का नाम नहीं; उसमें अनुशासन, संवेदना और जिम्मेदारी भी चाहिए। अच्छी शिक्षा, उपयोगी कौशल और समान अवसर इस ऊर्जा को सार्थक बनाते हैं। युवा यदि अफवाहों से बचें, भेदभाव मिटाएँ और अपने आसपास की समस्याओं के समाधान खोजें, तो बदलाव दूर नहीं। देश का भविष्य किसी अनजान कल में नहीं छिपा; वह आज मेहनत करते युवा हाथों में आकार ले रहा है।

**चरण 3: निष्कर्ष** लेख का केंद्रीय विचार है कि शिक्षा, अवसर और जिम्मेदार आचरण से जुड़ी युवा ऊर्जा भारत के विकास तथा सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकती है।

**त्वरित सुझाव:** युवा शक्ति पर लिखते समय क्षमता के उदाहरणों के साथ उसे सही दिशा देने वाला कोई ठोस साधन, जैसे कौशल या शिक्षा, जरूर रखें।

### 3(iii). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

हमारी बदलती आधुनिक जीवन-शैली

[6 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, विचार और संवेदना प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- आधुनिक जीवन-शैली के लाभ और समस्याओं को संतुलित दृष्टि से देखकर सार्थक जीवन का संदेश देना चाहिए।

**चरण 1: लेख का रूप निर्धारित कीजिए** यह विषय स्वतंत्र रचनात्मक लेख की माँग करता है। इसलिए विषयानुकूल शीर्षक देकर छोटे, परस्पर जुड़े अनुच्छेद लिखेंगे। आरंभ में बदलते जीवन का दृश्य, मध्य में उसके प्रभाव और अंत में संतुलित जीवन का संकेत देंगे। भाषा सरल, चित्रात्मक और विचारपूर्ण रखेंगे। अनावश्यक उदाहरणों के बजाय रोज़मर्रा के अनुभव चुनेंगे ताकि लेख विषय से न भटके।

**चरण 2: विचारों का क्रम बनाइए** लेख का केंद्र आधुनिक जीवन की बढ़ती गति है। मोबाइल, इंटरनेट और नई सुविधाओं से प्राप्त लाभ बताएँगे; फिर स्क्रीन पर बढ़ती निर्भरता, कम होते संवाद और स्वास्थ्य की उपेक्षा की चर्चा करेंगे। अंत में तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग और आत्मीय संबंधों के महत्त्व को स्पष्ट करेंगे।

**चरण 3: पूरा आदर्श रचनात्मक लेख हमारी बदलती आधुनिक जीवन-शैली**

सुबह अलार्म की आवाज़ से खुलती है और रात मोबाइल की चमक में ढल जाती है। आधुनिक जीवन की रफ़्तार ने हमारे दिन का नक्शा बदल दिया है। अब खरीदारी, पढ़ाई और बातचीत तक स्क्रीन पर सिमट रही है। तकनीक ने दूरियाँ घटाई हैं और अनेक काम आसान बनाए हैं।

लेकिन इस सुविधा की एक कीमत भी है। व्यस्तता के बीच परिवार का संवाद घट रहा है। पैदल चलने की जगह वाहन और घर के भोजन की जगह तैयार खाना बढ़ रहा है। शरीर थकता है, मन अकेला पड़ता है।

हमें आधुनिकता अपनानी चाहिए, पर विवेक के साथ। नियमित व्यायाम, प्रकृति का साथ और अपनों के लिए समय जीवन में संतुलन लौटाएँगे। असली प्रगति वही है जो सुविधाओं के साथ संवेदनाएँ भी बचाए।

**चरण 4: निष्कर्ष** लेख बदलती जीवन-शैली की सुविधाओं और चुनौतियों को जोड़ते हुए तकनीक, स्वास्थ्य तथा मानवीय संबंधों के बीच संतुलन का संदेश देता है।

**त्वरित सुझाव:** लगभग 120 शब्दों के लेख में एक मुख्य विचार चुनिए और आरंभ, विस्तार तथा अंत को उसी विचार से जोड़िए।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो और टेलीविज़न के समाचारों में भाषा-शैली के स्तर पर काफी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं, क्यों ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रेडियो और टेलीविज़न के समाचार सुनते समय श्रोता को बात तत्काल समझनी होती है।
- विविध श्रोताओं के लिए समाचार की भाषा सरल, स्पष्ट, सहज और बोलचाल के निकट रखी जाती है।

**चरण 1: भाषा संबंधी सावधानी का कारण समझिए** मुद्रित समाचार के विपरीत प्रसारित समाचार के कठिन अंश को सामान्य प्रसारण में तुरंत दुबारा पढ़ना संभव नहीं होता। इसलिए लंबे वाक्य, कठिन शब्द और अस्पष्ट अभिव्यक्तियाँ अर्थ ग्रहण करने में बाधा डालती हैं। स्पष्ट उच्चारण और सहज वाक्य समाचार का आशय सही ढंग से पहुँचाते हैं।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** रेडियो और टेलीविज़न के समाचार श्रोता तत्काल सुनते हैं; कठिन अंश को दुबारा पढ़ नहीं सकते। इसलिए भाषा सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त और बोलचाल के निकट होनी चाहिए। छोटे वाक्य, सहज शब्द तथा सही उच्चारण समाचार को तुरंत समझने में सहायक हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** तात्कालिक श्रवण और व्यापक श्रोता-वर्ग के कारण प्रसारण की भाषा सहज, स्पष्ट तथा तुरंत समझ आने योग्य रखना आवश्यक है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में पहले समाचार को दुबारा न पढ़ सकने का कारण दें, फिर सरल शब्दों और छोटे वाक्यों की आवश्यकता जोड़ें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

टी.वी. पर खबरों के प्रसारण के दौरान प्रयुक्त चरण 'लाइव' से आप क्या समझते हैं ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- लाइव में घटनास्थल से सीधे उसी समय समाचार या दृश्य का प्रसारण होता है।
- घटनास्थल का संवाददाता और स्टूडियो का समाचार-वाचक सीधे संपर्क के माध्यम से ताज़ा जानकारी दे सकते हैं।

**चरण 1: लाइव का आशय स्पष्ट कीजिए** यहाँ लाइव का संबंध घटना और प्रसारण के समय से है। घटनास्थल पर हो रही गतिविधि या वहाँ की ताज़ा जानकारी दर्शक तक सीधे पहुँचती है। संवाददाता वहाँ की स्थिति बताता है और स्टूडियो से पूछे गए प्रश्नों का तत्काल उत्तर भी दे सकता है। यह पहले रिकॉर्ड की गई रिपोर्ट चलाने से अलग है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** लाइव का अर्थ घटनास्थल से समाचार का सीधा, उसी समय प्रसारण है। इसमें संवाददाता वहाँ की ताज़ा स्थिति दर्शकों को बताता है तथा स्टूडियो के समाचार-वाचक से सीधे बातचीत कर सकता है। दर्शक घटना के दृश्य और जानकारी तत्काल प्राप्त करते हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** लाइव प्रसारण में घटनास्थल की ताज़ा गतिविधि और समाचार सीधे उसी समय दर्शकों तक पहुँचते हैं।

**त्वरित सुझाव:** लाइव की परिभाषा में घटनास्थल, सीधा संपर्क और उसी समय प्रसारण—इन तीन बातों को अवश्य जोड़िए।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और बुनियादी शैली कौन-सी है ? इसके उपयोग पर प्रकाश डालिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- समाचार लेखन में तथ्यों का क्रम उनके महत्त्व से निर्धारित होता है। सबसे आवश्यक जानकारी पहले दी जाती है।
- उल्टा पिरामिड शैली में मुख्य घटना के बाद उसका विस्तार और अंत में कम महत्त्वपूर्ण पृष्ठभूमि आती है।

**चरण 1: शैली की पहचान** समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और बुनियादी शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसमें घटनाओं को केवल घटित होने के समय के अनुसार नहीं सजाते, बल्कि पाठक के लिए उनके समाचार-मूल्य के आधार पर क्रम देते हैं।

**चरण 2: उपयोग समझिए** मुखड़े में प्रमुख तथ्य आने से पाठक तुरंत घटना का सार समझ लेता है। बाद के अनुच्छेद विस्तार देते हैं। स्थान कम होने पर संपादक नीचे के कम महत्त्वपूर्ण अंश हटा सकता है; इससे मुख्य समाचार सुरक्षित रहता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली उल्टा पिरामिड है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आरंभ में, फिर विवरण और अंत में पृष्ठभूमि दी जाती है। इससे पाठक तुरंत मुख्य बात जानता है तथा नीचे से संपादन करने पर आवश्यक सूचना सुरक्षित रहती है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में शैली का नाम लिखकर उसके दो उपयोग जोड़ें: शीघ्र सूचना और नीचे से सुविधाजनक संपादन।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में कारोबार और अर्थजगत से जुड़ी खबरों को विशेष स्थान क्यों दिया जाता है ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- आर्थिक पत्रकारिता व्यापार, उद्योग, रोजगार, बाजार तथा आर्थिक नीतियों की सूचनाएँ पाठकों तक पहुँचाती है।
- आर्थिक घटनाओं का प्रभाव केवल कारोबारियों पर नहीं, आम उपभोक्ता और परिवार के बजट पर भी पड़ता है।

**चरण 1: विषय का व्यापक प्रभाव** कारोबार और अर्थजगत में होने वाले बदलाव उत्पादन, रोजगार, वस्तुओं की कीमतों तथा लोगों की आय को प्रभावित करते हैं। इसलिए ऐसे समाचार सार्वजनिक जीवन से जुड़े होते हैं और समाचार-पत्रों के व्यापक पाठकवर्ग के लिए उपयोगी हैं।

**चरण 2: विशेष स्थान का कारण** बाजार, बैंकिंग, बचत और सरकारी आर्थिक नीतियों की जानकारी से पाठक अपने खर्च तथा निवेश के निर्णय समझदारी से ले सकते हैं। व्यापारियों को भी व्यावसायिक गतिविधियों की जानकारी मिलती है। व्यापक जनरुचि और व्यावहारिक उपयोगिता के कारण इन्हें विशेष स्थान मिलता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** कारोबार और अर्थजगत की घटनाएँ रोजगार, आय, महँगाई तथा दैनिक जीवन को प्रभावित करती हैं। इनकी जानकारी उपभोक्ताओं, निवेशकों और व्यापारियों को आर्थिक निर्णय लेने में सहायता देती है। व्यापक पाठक-रुचि और जनजीवन से सीधे संबंध के कारण इन्हें विशेष स्थान मिलता है।

**त्वरित सुझाव:** केवल व्यापारियों का लाभ न लिखें; रोजगार, महँगाई और आम पाठक के आर्थिक निर्णयों से संबंध जोड़ें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में पाठकों का अपना स्तंभ किसे और क्यों माना जाता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र में पाठकों की सक्रिय भागीदारी के लिए उनके विचारों और प्रतिक्रियाओं को भी स्थान दिया जाता है।
- संपादक के नाम पत्र स्तंभ पाठक और संपादकीय पक्ष के बीच संवाद का माध्यम है।

**चरण 1: स्तंभ का नाम बताइए** समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में संपादक के नाम पत्र को पाठकों का अपना स्तंभ माना जाता है। इसमें सामान्य पाठक अपनी बात लिखते हैं, इसलिए इसकी विषयवस्तु पाठकों की चिंताओं और अनुभवों को सामने लाती है।

**चरण 2: कारण स्पष्ट कीजिए** इस स्तंभ में पाठक प्रकाशित सामग्री पर प्रतिक्रिया, सहमति या असहमति व्यक्त करते हैं। वे स्थानीय समस्याएँ, शिकायतें और सुझाव भी उठाते हैं। इससे उनकी आवाज व्यापक समाज और संबंधित अधिकारियों तक पहुँचती है तथा समाचार-पत्र से उनका सीधा संवाद बनता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** संपादक के नाम पत्र को पाठकों का अपना स्तंभ माना जाता है। इसमें पाठक प्रकाशित सामग्री पर प्रतिक्रिया देते हैं तथा समस्याएँ, शिकायतें और सुझाव रखते हैं। यह उनकी आवाज को सार्वजनिक मंच देता है और समाचार-पत्र तथा पाठकों के बीच संवाद स्थापित करता है।

**त्वरित सुझाव:** स्तंभ का स्पष्ट नाम दें और कारण के रूप में पाठकों की प्रतिक्रिया, समस्याएँ तथा सुझाव लिखें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

‘कहानी के नाट्य रूपांतरण में संवादों का विशेष महत्त्व रहता है।’ संवाद लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय कथावाचक के वर्णन को पात्रों की क्रिया और बातचीत में बदलना पड़ता है। संवाद घटनाओं को दर्शकों के सामने घटित करते हैं।
- अच्छे संवाद पात्रों का स्वभाव, उनके आपसी संबंध और संघर्ष स्पष्ट करते हुए कथानक को आगे बढ़ाते हैं। भाषा पात्र और परिस्थिति के अनुरूप होनी चाहिए।

**चरण 1: संवादों के उद्देश्य और भाषा का निर्धारण** पहले पहचानें कि कहानी की कौन-सी घटना मंच पर दिखाई जाएगी और उसमें कौन-से पात्र भाग लेंगे। उनकी बातचीत से घटना के साथ उनके मनोभाव भी व्यक्त हों। पात्र की आयु, शिक्षा, सामाजिक परिवेश और स्वभाव के अनुकूल शब्द चुनें। सभी पात्रों से एक जैसी भाषा बुलवाने पर उनका अलग व्यक्तित्व स्पष्ट नहीं होता।

**चरण 2: मंचीय प्रभाव और संक्षिप्तता की जाँच** संवाद ऐसे हों जिन्हें अभिनेता सहजता से बोल सके और दर्शक सुनते ही समझ सकें। अनावश्यक वर्णन तथा लंबे भाषण हटाएँ। एक पात्र की बात से दूसरे की प्रतिक्रिया स्वाभाविक रूप से निकले। आवश्यकता के अनुसार विराम और हावभाव के संकेत उपयोगी हैं, पर मंच-निर्देशों को पात्रों की बोली का हिस्सा न बनाएँ।

**चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर** कहानी के नाट्य रूपांतरण में संवाद कथानक को आगे बढ़ाते तथा पात्रों के चरित्र और संबंधों को उद्घाटित करते हैं। इसलिए संवाद पात्र की आयु, स्वभाव, शिक्षा और सामाजिक परिवेश के अनुकूल हों। उनकी भाषा सरल, स्वाभाविक, बोलचाल की तथा मंच पर बोलने योग्य हो। संवाद संक्षिप्त, सार्थक और परिस्थिति के अनुरूप हों; अनावश्यक विस्तार और दोहराव से बचें। उनमें भाव, तनाव और संघर्ष की अभिव्यक्ति हो। परस्पर बातचीत का क्रम सहज रहे तथा मूल कहानी का आशय सुरक्षित रहे।

**चरण 4: निष्कर्ष** संवाद लिखते समय पात्रानुकूल भाषा, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, मंचीय उपयोगिता और मूल कथ्य की रक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है।

**त्वरित सुझाव:** संवाद की जाँच के लिए उसे बोलकर पढ़ें और देखें कि वह पात्र का स्वभाव बताता है या घटना को आगे बढ़ाता है।

**5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :**

रेडियो नाटक को सिनेमा और रंगमंच से अलग करने वाले कारकों का उल्लेख कीजिए।

[4 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- रेडियो श्रव्य माध्यम है। सिनेमा और रंगमंच में दिखाई देने वाले दृश्य, वेशभूषा और अभिनय रेडियो पर सीधे दिखाई नहीं देते।
- रेडियो नाटक संवाद, आवाज़, संगीत, ध्वनि-प्रभाव और मौन के माध्यम से पात्र, स्थान, समय तथा घटनाओं का बोध कराता है। श्रोता इनसे दृश्य की मानसिक छवि बनाता है।

**चरण 1: माध्यमों के आधारभूत अंतर को समझें** सिनेमा में कैमरा और दृश्य-संपादन तथा रंगमंच पर सजीव दृश्य-अभिनय कथा प्रस्तुत करते हैं। दर्शक पात्रों की वेशभूषा, चेहरे और गतिविधियों को देख सकता है। रेडियो के श्रोता को केवल ध्वनि मिलती है; इसलिए रंग, रूप या मूक हावभाव अपने-आप कथ्य व्यक्त नहीं कर सकते। आवश्यक जानकारी श्रव्य संकेतों से स्पष्ट करनी होती है।

**चरण 2: रेडियो की अभिव्यक्ति के साधन पहचानें** पात्र की आवाज़ और बोलने की शैली उसकी पहचान बनाती है। पदचाप, घंटी, वर्षा जैसी ध्वनियाँ वातावरण का बोध कराती हैं। संगीत भाव तथा दृश्य-परिवर्तन का संकेत दे सकता है और मौन तनाव उत्पन्न कर सकता है। संवादों में ऐसी स्पष्टता चाहिए कि पात्र और घटनाक्रम समझ में आएँ। श्रोता इन संकेतों से दृश्य की कल्पना करता है।

**चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर** रेडियो नाटक केवल श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा और रंगमंच में दृश्य भी दिखाई देते हैं। इसमें दृश्य-सज्जा, वेशभूषा, शारीरिक अभिनय तथा चेहरे के भाव सीधे प्रस्तुत नहीं किए जा सकते। इसलिए संवाद, स्वर के उतार-चढ़ाव, संगीत, ध्वनि-प्रभाव और मौन से पात्रों, वातावरण तथा घटनाओं का परिचय कराया जाता है। पात्र अपनी आवाज़ से पहचाने जाते हैं। स्थान और समय के परिवर्तन भी श्रव्य संकेतों से स्पष्ट करने पड़ते हैं। श्रोता इन्हीं संकेतों के सहारे अपने मन में दृश्य रचता है।

**चरण 4: निष्कर्ष** रेडियो नाटक की विशिष्टता उसकी श्रव्य प्रस्तुति और श्रोता की कल्पना में है; दृश्य माध्यमों की जानकारी यहाँ आवाज़ तथा ध्वनि-संकेत देते हैं।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर लिखते समय हर दृश्य साधन के सामने उसका रेडियो वाला श्रव्य विकल्प रखें, जैसे हावभाव के सामने स्वर का उतार-चढ़ाव।

**5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :**

आत्मनिर्भर होकर लेखन करना ही अप्रत्याशित लेखन की कुशलता एवं सुघड़ता का आधार है, कैसे ?

[4 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन में लेखक अपने अनुभव, स्वतंत्र चिंतन और कल्पना से विषय का विकास करता है।
- आत्मनिर्भरता का अर्थ तैयार सामग्री की नकल करने के स्थान पर अपनी दृष्टि और उपयुक्त भाषा के सहारे विचार प्रस्तुत करना है।

**चरण 1: उत्तर की रूपरेखा** उत्तर में आत्मनिर्भरता का अर्थ स्पष्ट करके उसे मौलिकता, विचारों की क्रमबद्धता और सहज भाषा से जोड़ना चाहिए। विषय अपरिचित होने पर भी अपने परिवेश और अनुभव से उपयुक्त उदाहरण चुने जा सकते हैं।

**चरण 2: विचार और भाषा के संबंध को समझना** अनजान विषय मिलने पर लेखक पहले उसके प्रमुख संकेतों पर स्वयं विचार करता है। वह स्मृति, निरीक्षण और अनुभव से सामग्री जुटाता है तथा असंबद्ध बातों को अलग करता है। इसके बाद विचारों को आरंभ, विकास और निष्कर्ष के क्रम में रखता है। स्वतंत्र निर्णय उसे घिसे-पिटे कथनों की पुनरावृत्ति से बचाता है। अपने विचार की स्पष्ट समझ होने से उपयुक्त शब्द चुनना और अनावश्यक विस्तार हटाना भी आसान होता है। यही प्रक्रिया लेखन को कुशल, सुघड़ और स्वाभाविक बनाती है।

**चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर** अप्रत्याशित लेखन में विषय पहले से निश्चित नहीं होता, इसलिए लेखक को अपने अनुभव, कल्पना और स्वतंत्र चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। तैयार सामग्री या दूसरों के विचारों पर निर्भरता उसकी मौलिकता सीमित करती है। आत्मनिर्भर लेखक विषय के विविध पक्ष पहचानकर अपने विचारों को क्रमबद्ध करता है तथा उपयुक्त उदाहरण चुनता है। वह भाषा, शैली और अभिव्यक्ति संबंधी निर्णय स्वयं लेता है। इससे लेखन में स्वाभाविकता, स्पष्टता और प्रवाह आता है। इसीलिए आत्मनिर्भरता अप्रत्याशित लेखन की कुशलता और सुघड़ता का आधार है।

**चरण 4: निष्कर्ष** आत्मनिर्भर चिंतन से विषय का मौलिक और क्रमबद्ध विकास होता है तथा अभिव्यक्ति सहज और प्रभावपूर्ण बनती है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में आत्मनिर्भरता को केवल आत्मविश्वास न कहें; उसे अनुभव, स्वतंत्र विचार, मौलिकता और भाषा के चयन से जोड़ें।

#### 6. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना

मैं पेंच को खोलने के बजाए

उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

क्योंकि इस करतब पर मुझे

साफ़ सुनाई दे रही थी

तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह।

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !

हारकर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोक दिया।

[5 अंक]

**6(i).** कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए :

| कॉलम-I                         | कॉलम-II                         |
|--------------------------------|---------------------------------|
| 1. बात का पेंच खोलना           | (i) बात का प्रभावहीन हो जाना    |
| 2. बात की चूड़ी मर जाना        | (ii) बात में कसावट का न होना    |
| 3. पेंच को कील की तरह ठोक देना | (iii) बात को सहज और स्पष्ट करना |

[1 अंक]

(A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

**सही उत्तर:** (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

**हल:**

**अवधारणा:**

- काव्यांश में पेंच और चूड़ी का रूपक बात तथा भाषा के पारस्परिक संबंध को समझाता है।
- सुमेलन के लिए प्रत्येक बिंब का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।

**चरण 1: बिंबों का सुमेलन** बात का पेंच खोलने का अर्थ बात को सहज और स्पष्ट करना है, इसलिए 1 का संबंध (iii) से है। चूड़ी मरने पर पेंच अपना काम नहीं करता; इसी प्रकार बात प्रभावहीन हो जाती है, अतः 2 का संबंध (i) से है। कील की तरह ठोकने में पेंच की स्वाभाविक पकड़ और कसावट नहीं रहती, इसलिए 3 का संबंध (ii) से है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच** विकल्प (B) और (C) में पहला सुमेलन ही गलत है। विकल्प (D) में पहला संबंध सही है, पर दूसरे और तीसरे अर्थ आपस में बदल दिए गए हैं। केवल (A) में तीनों संबंध प्रसंगानुकूल हैं।

**चरण 3: निष्कर्ष** सही सुमेलन 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) है। अतः सही विकल्प (A) है।

**त्वरित सुझाव:** पहले सबसे स्पष्ट संबंध 'पेंच खोलना—बात स्पष्ट करना' पहचानें, फिर शेष दोनों बिंबों का प्रसंग देखकर निर्णय करें।

6(ii). कवि को किस बात का डर था ?

[1 अंक]

- (A) कहीं बात बन न जाए  
(B) कहीं बात और न बिगड़ जाए  
(C) कहीं कोई बात न हो  
(D) कहीं बात पकड़ में न आ जाए
- सही उत्तर:** (B) कहीं बात और न बिगड़ जाए

**हल:**

**अवधारणा:**

- कवि के डर का अर्थ उससे पहले और बाद में वर्णित स्थिति को जोड़कर समझना है।
- भाषा पर जोर-जबरदस्ती करने से सीधी बात अपना अर्थ और प्रभाव खो सकती है।

**चरण 1: डर का प्रसंग** कवि मुश्किल को धैर्य से समझे बिना पेंच खोलने के स्थान पर उसे कसता जा रहा था। उसे डर था कि इस प्रयास से बात सुलझने के बजाय और बिगड़ जाएगी। आगे 'बात की चूड़ी मर गई' इसी डर के सच होने का संकेत है।

**चरण 2: विकल्पों का परीक्षण** (B) में बात और बिगड़ जाने की आशंका स्पष्ट है। (A) का बात बन जाना तो वांछित परिणाम होता। (C) की कोई बात न होना प्रसंग का आशय नहीं है। (D) में पकड़ में न आने की बात है, जबकि यहाँ अपनी कोशिशों से बात को अधिक बिगाड़ देने का डर प्रमुख है।

**चरण 3: निष्कर्ष** कवि को डर था कि कहीं बात और न बिगड़ जाए। अतः सही विकल्प (B) है।

**त्वरित सुझाव:** 'जिसका मुझे डर था' के बाद आने वाले परिणाम को पढ़ें; वही पहले की आशंका का सही अर्थ बताता है।

6(iii). 'इस करतब' के माध्यम से कवि ने किस ओर संकेत किया है ?

[1 अंक]

- (A) बात को सहज और सरल बना देने की ओर  
(B) अपने भाषिक ज्ञान और कौशल की ओर  
(C) श्रोताओं से मिल रही प्रशंसा की ओर  
(D) बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर
- सही उत्तर:** (D) बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर

**हल:**

**अवधारणा:**

- संकेतवाची पद 'इस करतब' का अर्थ उससे पहले वर्णित क्रिया से खुलता है।
- कविता अर्थ की सहजता के स्थान पर भाषाई प्रदर्शन को महत्त्व देने की प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाती है।

**चरण 1: करतब का संकेत** कवि कहता है कि वह पेंच खोलने के बजाय उसे बेतरह कसता जा रहा था। यह बात को सरल करने के बजाय शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने का बिंब है। इसी क्रिया को 'इस करतब' कहा गया है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर** (A) में सरल बनाने की बात है, जो कवि के व्यवहार के विपरीत है। (B) भाषिक ज्ञान और कौशल का सामान्य उल्लेख है; यहाँ संकेत उसके दिखावटी प्रयोग से बढ़ती जटिलता की ओर है। (C) में श्रोताओं की प्रशंसा उस करतब की प्रतिक्रिया है, स्वयं करतब नहीं। (D) ठीक उसी क्रिया को व्यक्त करता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** 'इस करतब' का संकेत बात को शब्दजाल में उलझाने और जटिल बनाने की ओर है। अतः सही विकल्प (D) है।

**त्वरित सुझाव:** 'इस' जैसे संकेतवाची शब्द का संदर्भ जानने के लिए पिछली क्रिया पढ़ें और उसे अगली प्रतिक्रिया से अलग पहचानें।

**6(iv).** निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

**कथन :** बात का सही शब्द से जुड़ना ही सहज भावाभिव्यक्ति है।

**कारण :** प्रत्येक अभिव्यक्ति के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, अतः भाषा के प्रयोग में चमत्कार प्रदर्शन से परे अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

[1 अंक]

(A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(B) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

**सही उत्तर:** (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

**हल:**

**अवधारणा:**

- सहज भावाभिव्यक्ति के लिए भाव और उसके अनुरूप शब्द का संबंध आवश्यक है।
- कथन-कारण में दोनों की सत्यता के साथ यह भी जाँचना होता है कि कारण कथन को स्पष्ट करता है या नहीं।

**चरण 1: कथन की जाँच** कथन सही है। भाव के अनुरूप सही शब्द मिलने पर बात सहज और स्पष्ट रूप में व्यक्त होती है। कविता में इसी स्वाभाविक संबंध के बिगड़ने से बात का प्रभाव नष्ट होता है।

**चरण 2: कारण की जाँच** कारण भी सही है। अभिव्यक्ति के अनुकूल शब्दों का चयन सावधानी से होना चाहिए। भाषा के चमत्कार का प्रदर्शन करने के लिए अनुपयुक्त शब्द थोपने पर बात उलझ जाती है।

**चरण 3: व्याख्या का संबंध और विकल्प** कारण बताता है कि उचित शब्द का चयन सहज अभिव्यक्ति के लिए क्यों आवश्यक है, इसलिए वह कथन की सही व्याख्या करता है। (A) दोनों को गलत और (B) कारण को गलत बताता है। (D) व्याख्या के संबंध को अस्वीकार करता है। ये तीनों प्रसंग के अनुरूप नहीं हैं।

**चरण 4: निष्कर्ष** कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (C) है।

**त्वरित सुझाव:** पहले कथन और कारण को अलग-अलग पढ़ें; फिर देखें कि कारण में दिया शब्द-चयन कथन की सहज अभिव्यक्ति को समझाता है या नहीं।

**6(v).** तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाही में कौन-सा भाव है ?

[1 अंक]

(A) आक्रोश का

(B) व्यंग्य का

(C) प्रशंसा का

(D) समानता का

**सही उत्तर:** (B) व्यंग्य का

**हल:**

**अवधारणा:**

- कविता में किसी कथन का भाव केवल उसके शाब्दिक अर्थ से नहीं, पूरे प्रसंग से तय होता है।
- निरर्थक भाषाई करतब पर मिलने वाली वाह-वाही के उल्लेख में कवि की आलोचनात्मक दृष्टि छिपी है।

**चरण 1: वाह-वाही का प्रसंग** कवि बात को स्पष्ट करने के बजाय उलझा रहा है, फिर भी तमाशबीन शाबाशी दे रहे हैं। अर्थ बिगड़ने पर भी प्रदर्शन को सराहने की यह प्रवृत्ति विडंबनापूर्ण है। कवि इसके माध्यम से खोखली प्रशंसा और भाषा के दिखावे पर व्यंग्य करता है।

**चरण 2: विकल्पों का परीक्षण** इसलिए (B) सही है। (C) केवल 'शाबाशी' का बाहरी शाब्दिक अर्थ पकड़ता है और प्रसंग का व्यंग्य

छोड़ देता है। (A) में आक्रोश है, जबकि यहाँ विडंबना द्वारा आलोचना है। (D) का समानता का भाव इस प्रसंग में उपस्थित नहीं है।

**चरण 3: निष्कर्ष** तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाही में व्यंग्य का भाव है। अतः सही विकल्प (B) है।

**त्वरित सुझाव:** वाह-वाही किस काम पर मिल रही है, यह जाँचें; बात बिगाड़ने पर प्रशंसा मिलना यहाँ व्यंग्य पहचानने का निर्णायक संकेत है।

**7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :**

‘पतंग’ कविता में कवि ने शरद ऋतु के आगमन की कल्पना अनूठे अंदाज में की है। स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- कविता में ऋतु का वर्णन केवल मौसम की सूचना नहीं है। कवि प्राकृतिक परिवर्तनों को दृश्य और मानवीय क्रियाओं के सहारे प्रस्तुत करता है।
- भादों की वर्षा के बाद शरद का खुला आकाश, चमक और ताजगी बच्चों के पतंग उड़ाने के उत्साह की पृष्ठभूमि बनते हैं।

**चरण 1: ऋतु के आगमन का दृश्य समझिए** भादों के बीतने पर वर्षा का अँधेरा और बादलों का घेरा हटता है। सुबह की चमक खरगोश की आँखों जैसी लाल दिखाई देती है। इस उपमा में रंग के साथ सुबह की सजीवता और कोमलता भी उभरती है।

**चरण 2: कल्पना की अनूठी विशेषता पहचानिए** कवि शरद को साइकिल चलाते हुए आने वाले व्यक्ति की तरह देखता है। उसकी साइकिल तेज चलती है और वह चमकीले संकेतों से सबको बुलाता प्रतीत होता है। इस कल्पना से ऋतु दूर खड़ी प्रकृति न रहकर बच्चों की साथी बन जाती है। आकाश की खुली छत उन्हें पतंग उड़ाने का निमंत्रण देती है। पुलों को पार करती हुई यह ऋतु बच्चों की उमंग और गतिशीलता से जुड़ जाती है।

**चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए उसे तेज साइकिल चलाकर आने वाले उत्साही व्यक्ति के रूप में कल्पित किया है। भादों के बाद की सुबह खरगोश की आँखों जैसी लाल और चमकीली है। शरद अपनी चमक से संकेत करती और सबको बुलाती दिखाई देती है। इससे वर्षा के बाद प्रकृति की निर्मलता, ताजगी और बच्चों का उल्लास सजीव हो उठता है।

**चरण 4: निष्कर्ष** शरद का साइकिल सवार के रूप में मानवीकरण और सुबह की लालिमा की अनूठी उपमा ऋतु के आगमन को गतिशील एवं उत्सवपूर्ण बनाते हैं।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में केवल सुहावना मौसम न लिखें; खरगोश की आँखों की उपमा और साइकिल चलाती शरद का मानवीकरण अवश्य जोड़ें।

**7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :**

‘विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते’ पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए तर्कसंगत उत्तर दीजिए कि ‘बादल राग’ कविता क्रांति का आह्वान गीत है।

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- निराला की कविता में बादल परिवर्तनकारी क्रांति के प्रतीक हैं। उनका गर्जन स्थापित शोषणकारी व्यवस्था को चुनौती देता है।
- छोटे पौधों तथा पीड़ित जनों का उल्लास इस बात का संकेत है कि परिवर्तन का लाभ वंचितों को मिलता है, जबकि विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग भयभीत होता है।

**चरण 1: पंक्ति में छोटे का आशय स्पष्ट कीजिए** छोटे पौधे बादलों की गर्जना और वर्षा से हर्षित होकर लहलहाते हैं। कविता के सामाजिक आशय में ये छोटे लोग अर्थात् शोषित, गरीब और साधनहीन जन हैं। क्रांति उन्हें उठने, अपने अधिकार पाने और सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अवसर देती है।

**चरण 2: क्रांति के आह्वान का आधार जोड़िए** बादल का गर्जन विप्लव का स्वर है। संपन्न वर्ग उससे भयभीत है, क्योंकि उसके शोषण और वैभव पर संकट आता है। इसके विपरीत जर्जर किसान बादल को बुलाता है। यह विरोध दिखाता है कि कविता शोषण के अंत और पीड़ितों के उत्थान की आकांक्षा व्यक्त करती है।

**चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** विप्लव के स्वर से छोटे पौधे हर्षित होते हैं; सामाजिक स्तर पर ये शोषित और वंचित लोगों के प्रतीक हैं। क्रांति उन्हें अधिकार, सम्मान और उन्नति देती है, जबकि शोषक संपन्न वर्ग भयभीत होता है। जर्जर किसान बादल को पुकारकर परिवर्तन चाहता है। इसलिए बादल की गर्जना शोषण के विनाश और पीड़ित जन की मुक्ति का आह्वान बनाती है।

**चरण 4: निष्कर्ष** बादल का विप्लवी स्वर शोषकों को डराता और शोषितों में आशा जगाता है; इसी वर्गगत परिवर्तन की पुकार कविता को क्रांति का आह्वान गीत बनाती है।

**त्वरित सुझाव:** प्रकृति के दृश्य के बाद उसका सामाजिक अर्थ लिखें: छोटे पौधे शोषित जन हैं और गर्जता बादल क्रांति का प्रतीक है।

**7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :**

‘छोटा मेरा खेत’ कविता में ‘रस का अक्षयपात्र’ कथन के द्वारा कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है ? [3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- कवि कागज के पन्ने को खेत और कविता की रचना को खेती के रूपक में प्रस्तुत करता है। शब्दों के अंकुर से भाव और कल्पना का विकास होता है।
- काव्य का रस पाठकों को बार-बार आनंद देता है। उसका आस्वादन भौतिक वस्तु के उपभोग की तरह उसे समाप्त नहीं करता।

**चरण 1: खेती और रचना का संबंध समझिए** साधारण खेत में बीज से फसल उगती है। कवि के कागजी खेत में भाव का बीज, कल्पना का पोषण और शब्दों का विकास मिलकर साहित्य रचते हैं। परिपक्व रचना अपनी अनुभूति और सौंदर्य से पाठकों के लिए आनंद की सामग्री बनती है।

**चरण 2: अक्षयपात्र का आशय स्पष्ट कीजिए** अक्षयपात्र ऐसा पात्र है जिसकी सामग्री समाप्त नहीं होती। अच्छी कविता भी जितनी पढ़ी और समझी जाती है, उतना ही नया रस देती है। अलग-अलग पाठक और पीढ़ियाँ उससे आनंद ग्रहण करते हैं। इससे उसका भाव-सौंदर्य घटता नहीं, बल्कि नए अर्थ खुलते रहते हैं।

**चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर** रस का अक्षयपात्र कहकर कवि रचनाकर्म की अमरता, असीम आनंददायिनी शक्ति और अर्थ की समृद्धि बताता है। भाव तथा कल्पना से उपजी शब्दों की फसल साधारण फसल की तरह समाप्त नहीं होती। पाठक जितना उसका आस्वादन करते हैं, उतना ही नया रस पाते हैं। श्रेष्ठ रचना समय बीतने पर भी अनेक पीढ़ियों को आनंद देती और नए अर्थ खोलती रहती है।

**चरण 4: निष्कर्ष** रचनाकर्म का फल अविनाशी काव्य-रस है, जो बार-बार पढ़े जाने पर भी समाप्त नहीं होता और नए अर्थों से पाठकों को समृद्ध करता रहता है।

**त्वरित सुझाव:** अक्षयपात्र को केवल अमरता तक सीमित न करें; बार-बार आस्वादन से नया आनंद और अर्थ मिलने का बिंदु भी लिखें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘दिन जल्दी-जल्दी ढलता है’ कविता में कवि ने यह क्यों कहा है – ‘मैं होऊँ किसके हित चंचल’ ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- कविता में दिन ढलना घर लौटने की व्याकुलता से जुड़ा है। प्रियजनों की प्रतीक्षा लौटने वाले को गति और उत्साह देती है।
- चिड़ियों के बच्चों और कवि की स्थिति का अंतर कवि के अकेलेपन को स्पष्ट करता है।

**चरण 1: चिड़ियों के उत्साह से तुलना कीजिए** घोंसलों में बच्चे चिड़ियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनसे मिलने की इच्छा के कारण चिड़ियों के पंखों में गति भर जाती है। घर पहुँचने का उनका उद्देश्य स्पष्ट है। इसी दृश्य के सामने कवि अपने जीवन में प्रतीक्षा करने वाले प्रिय के अभाव को अनुभव करता है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** कवि के लौटने की प्रतीक्षा करने वाला कोई प्रियजन नहीं है। चिड़ियों को उनके बच्चों की प्रतीक्षा शीघ्र लौटने के लिए उत्साहित करती है, किंतु कवि स्वयं को अकेला पाता है। इसीलिए वह पूछता है कि किसके लिए व्याकुल और उत्साहित हो।

**चरण 3: निष्कर्ष** यह प्रश्न कवि के अकेलेपन, प्रिय के अभाव और लौटने के उत्साह के क्षीण पड़ जाने को व्यक्त करता है।

**त्वरित सुझाव:** चंचल का अर्थ यहाँ व्याकुल या उत्साहित होना है; उत्तर में प्रतीक्षारत बच्चों वाली चिड़ियों से कवि की स्थिति की तुलना करें।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘सूर्योदय के साथ कौन-सा जादू टूट जाता है ? ‘उषा’ कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- कविता में सूर्योदय से पहले आकाश का सौंदर्य रंगों और बिंबों के माध्यम से उभरता है।
- प्रातःकाल की बदलती छवियाँ जादू जैसी लगती हैं; सूर्य निकलने पर यह विशेष दृश्य समाप्त हो जाता है।

**चरण 1: आकाश की बदलती छवियाँ समझें** कवि ने भोर के आकाश को नीले शंख, राख से लीपे चौके, केसर से धुली काली सिल और लाल खड़िया से मली स्लेट के बिंबों में देखा है। ये उपमान अंधकार से प्रकाश की ओर बदलते आकाश की रंगत को सजीव बनाते हैं। आगे नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब भी उषा के मोहक सौंदर्य को प्रकट करता है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** सूर्योदय के साथ उषाकालीन आकाश के बदलते रंगों और मोहक दृश्यों का जादू टूट जाता है। नीले शंख, राख से लीपे चौके तथा केसर से धुली सिल जैसे बिंबों में दिखाई देने वाला भोर का रहस्यमय सौंदर्य सूर्य निकलते ही समाप्त हो जाता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** सूर्योदय से पहले की रंग-बिरंगी, सम्मोहक प्राकृतिक छवियों का जादू सूर्य निकलने पर टूट जाता है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में जादू को उषा के बदलते रंगों से जोड़ें और सूर्य निकलने पर उनके समाप्त होने की बात लिखें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है, बालक तो हई चाँद पै ललचाया है’ – पंक्ति में बाल मनोविज्ञान के किस पक्ष का वर्णन हुआ है ?

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- बालक की इच्छाएँ तर्क और व्यावहारिक सीमाओं से संचालित नहीं होतीं।
- चाँद को पाने की ज़िद बालमन की चंचलता, सहज आकर्षण और कल्पनाशीलता प्रकट करती है।

**चरण 1: बालक की इच्छा पहचानें** आँगन में ठुनकता बालक चाँद देखकर उसे पाने के लिए मचल उठा है। चाँद की चमक और सुंदरता उसे आकर्षित करती है। वह नहीं समझता कि आकाश का चाँद हाथ में नहीं आ सकता। पंक्ति में बालक की इसी निश्छल इच्छा और अपनी बात पूरी करवाने के आग्रह का चित्रण है। इसे वयस्क की समझ या किसी स्वार्थपूर्ण योजना से नहीं जोड़ना चाहिए।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** इस पंक्ति में बालमन की सहज जिज्ञासा, चंचलता और ज़िद का वर्णन है। सुंदर चाँद देखकर बालक उसे पाने को मचलता है। वह संभव-असंभव का अंतर नहीं जानता; इसलिए आकर्षक वस्तु को अपना बनाने का उसका भोला आग्रह ठुनकने के रूप में व्यक्त होता है।

**चरण 3: निष्कर्ष** चाँद पाने की ज़िद में बालक का निश्छल, कल्पनाशील और हठी स्वभाव प्रकट होता है।

**त्वरित सुझाव:** चाँद माँगने की घटना को बालक की भोली ज़िद और संभव-असंभव का भेद न समझने से जोड़कर समझाएँ।

9. शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना-इतना सरस वह कैसे बना रहता है ? क्या ये बाह्य परिवर्तन – धूप, वर्षा, आँधी, लू – अपने आप में सत्य नहीं हैं ? ..... उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है – हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !

[5 अंक]

9(i). शिरीष का पेड़ लेखक में कौन-सी भावना जगा देता है ?

[1 अंक]

- (A) भ्रातृत्व की
- (B) सद्भाव की
- (C) अजेय मंत्र की
- (D) सौंदर्य बोध की

**सही उत्तर:** (C) अजेय मंत्र की

**हल:**

**अवधारणा:**

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त शिरीष की सरसता, स्थिरता और अवधूत जैसा आचरण है।
- बाहरी प्रतिकूलता के बीच बनी आंतरिक शक्ति को विकल्पों के अर्थ से मिलाना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश का संकेत पहचानें** ऊपर उठती तरंगें तथा विपरीत मौसम में शिरीष का सरस बने रहना लेखक को अजेयता और आंतरिक दृढ़ता की प्रेरणा देता है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) भ्रातृत्व और (B) सद्भाव पारस्परिक संबंधों के भाव हैं; यहाँ मुख्य बल उन पर नहीं है। (D) सौंदर्य बोध शिरीष की सुंदरता से जुड़ सकता है, पर उद्धृत प्रसंग का निर्णायक भाव कठिनाइयों के बीच अजेय बने रहना है।

**चरण 3: निष्कर्ष** अतः सही विकल्प (C) है — अजेय मंत्र की।

**त्वरित सुझाव:** पहले गद्यांश में स्थिरता और कोमल-कठोर स्वभाव के संकेत खोजें, फिर उनसे सबसे सीधा मेल रखने वाला विकल्प चुनें।

9(ii). 'क्या ये बाह्य ... अपने आप में सत्य नहीं हैं?' प्रश्न के द्वारा लेखक ने किस ओर संकेत किया है ?

[1 अंक]

- (A) मौसम परिवर्तन की दार्शनिक व्याख्या की ओर
- (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर
- (C) प्राकृतिक आपदाओं से नहीं डरने की ओर
- (D) प्राकृतिक आपदाओं को स्वीकार करने की ओर

**सही उत्तर:** (B) जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर

**हल:**

**अवधारणा:**

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त शिरीष की सरसता, स्थिरता और अवधूत जैसा आचरण है।
- बाहरी प्रतिकूलता के बीच बनी आंतरिक शक्ति को विकल्पों के अर्थ से मिलाना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश का संकेत पहचानें** धूप, वर्षा, आँधी और लू वास्तविक बाह्य कठिनाइयाँ हैं। लेखक उन्हें नकारता नहीं, बल्कि उनके बीच भी शिरीष के स्थिर बने रहने का कारण खोजता है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) केवल मौसम की दार्शनिक व्याख्या तक सीमित है। (C) न डरने और (D) आपदाएँ स्वीकार करने में आंशिक भाव है, किंतु कठिनाइयों को मानकर उनके बीच आंतरिक स्थिरता के सत्य की खोज का व्यापक आशय (B) में है।

**चरण 3: निष्कर्ष** अतः सही विकल्प (B) है — जीवन की कठिनाइयों को स्वीकार कर सत्य की खोज की ओर।

**त्वरित सुझाव:** पहले गद्यांश में स्थिरता और कोमल-कठोर स्वभाव के संकेत खोजें, फिर उनसे सबसे सीधा मेल रखने वाला विकल्प चुनें।

9(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए :

[1 अंक]

- (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।
- (B) 'शिरीष' प्रतिकूल परिस्थितियों में विचलित हो जाता है।
- (C) 'शिरीष' युद्ध की स्थिति में सहनशक्ति खो देता है।
- (D) 'शिरीष' विपरीत समय में हतोत्साहित हो जाता है।

**सही उत्तर:** (A) 'शिरीष' जिजीविषा और तुमुल कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।

**हल:**

**अवधारणा:**

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त शिरीष की सरसता, स्थिरता और अवधूत जैसा आचरण है।
- बाहरी प्रतिकूलता के बीच बनी आंतरिक शक्ति को विकल्पों के अर्थ से मिलाना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश का संकेत पहचानें** गद्यांश कहता है कि चिलकती धूप और बाह्य परिवर्तनों के बीच भी शिरीष सरस तथा स्थिर रह सका है। इससे जीवनीशक्ति और धीरता प्रमाणित होती है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (B) का विचलित होना, (C) का सहनशक्ति खो देना और (D) का हतोत्साहित होना तीनों शिरीष की स्थिरता के विपरीत हैं। गद्यांश में युद्ध की कोई विशिष्ट घटना भी नहीं दी गई है।

**चरण 3: निष्कर्ष** अतः सही विकल्प (A) है — शिरीष जिजीविषा और कोलाहल-कलह के बीच धीरता का परिचायक है।

**त्वरित सुझाव:** पहले गद्यांश में स्थिरता और कोमल-कठोर स्वभाव के संकेत खोजें, फिर उनसे सबसे सीधा मेल रखने वाला विकल्प चुनें।

9(iv). गद्यांश में शिरीष, गांधी जी और अवधूत तीनों का उल्लेख हुआ है, तीनों में क्या समानता थी ?

[1 अंक]

- (A) तीनों ने अपना जीवन परोपकार में बिताया।
- (B) तीनों को समाज में लोकप्रियता प्राप्त थी।
- (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।
- (D) सभी ने सामाजिक जीवन का बहिष्कार किया।

**सही उत्तर:** (C) परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।

**हल:**

**अवधारणा:**

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त शिरीष की सरसता, स्थिरता और अवधूत जैसा आचरण है।
- बाहरी प्रतिकूलता के बीच बनी आंतरिक शक्ति को विकल्पों के अर्थ से मिलाना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश का संकेत पहचानें** शिरीष और गांधी दोनों को वायुमंडल से रस खींचकर कोमल तथा कठोर बने रहने वाला कहा गया है। अवधूत की भाँति वे बाहरी प्रभावों के बीच भीतर से स्थिर रहते हैं।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) परोपकार और (B) लोकप्रियता इस तुलना का बताया गया आधार नहीं हैं। (D) सामाजिक जीवन का बहिष्कार भी गद्यांश का कथन नहीं है। तुलना का केंद्र परिस्थिति से शक्ति लेकर दृढ़ बने रहना है।

**चरण 3: निष्कर्ष** अतः सही विकल्प (C) है — परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढालकर स्वभाव से दृढ़ रहे।

**त्वरित सुझाव:** पहले गद्यांश में स्थिरता और कोमल-कठोर स्वभाव के संकेत खोजें, फिर उनसे सबसे सीधा मेल रखने वाला विकल्प चुनें।

9(v). गद्यांश का केंद्रीय भाव है :

[1 अंक]

- (A) प्रेम का मोह से श्रेष्ठ होना
- (B) समानता का असमानता से श्रेष्ठ होना
- (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना
- (D) सत्य का असत्य भाव से श्रेष्ठ होना

**सही उत्तर:** (C) आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना

**हल:**

**अवधारणा:**

- उत्तर का आधार गद्यांश में व्यक्त शिरीष की सरसता, स्थिरता और अवधूत जैसा आचरण है।
- बाहरी प्रतिकूलता के बीच बनी आंतरिक शक्ति को विकल्पों के अर्थ से मिलाना चाहिए।

**चरण 1: गद्यांश का संकेत पहचानें** कठोर धूप और आँधी-लू जैसी बाहरी शक्तियों के सामने शिरीष की सरसता और स्थिरता बनी रहती है। गांधी की तुलना इसी आंतरिक शक्ति को मानवीय रूप में सामने लाती है।

**चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें** (A) प्रेम और मोह की, (B) समानता और असमानता की तथा (D) सत्य और असत्य भाव की तुलना गद्यांश में नहीं की गई है। उसका केंद्र बाहरी प्रतिकूलताओं पर आंतरिक दृढ़ता का प्रभाव है।

**चरण 3: निष्कर्ष** अतः सही विकल्प (C) है — आत्मबल का देहबल से श्रेष्ठ होना।

**त्वरित सुझाव:** पहले गद्यांश में स्थिरता और कोमल-कठोर स्वभाव के संकेत खोजें, फिर उनसे सबसे सीधा मेल रखने वाला विकल्प चुनें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘चूड़ाकर्म’ से क्या अभिप्राय है ? अपने चूड़ाकर्म की उपयुक्तता सिद्ध करने के लिए भक्तिन ने शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका को दिया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चूड़ाकर्म का आशय सिर के बाल मुँडवाना है। पाठ में यह शब्द भक्तिन के नियमित सिर मुँडवाने के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।
- उत्तर में पहले शब्द का अर्थ, फिर लेखिका की आपत्ति और भक्तिन का शास्त्र-संबंधी तर्क देना चाहिए।

**चरण 1: प्रसंग और शब्दार्थ समझें** महादेवी वर्मा को स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता था। इसलिए उन्होंने भक्तिन को ऐसा करने से रोका। भक्तिन अपने चूड़ाकर्म को अनुचित मानने के लिए तैयार नहीं थी और उसने शास्त्र का सहारा लेकर अपने व्यवहार का समर्थन किया। यहाँ किसी बालक के संस्कार की सामान्य चर्चा के बजाय भक्तिन के सिर मुँडवाने का प्रसंग अपेक्षित है।

**चरण 2: तर्क और उसके प्रभाव को जोड़ें** लेखिका ने पूछा कि शास्त्र में क्या लिखा है। भक्तिन ने तत्काल तीर्थ जाने और सिद्ध होने को सिर मुँडवाने से जोड़ने वाला सूत्र सुना दिया। लेखिका उस कथन के शास्त्रीय स्रोत का पता नहीं लगा सकीं और मौन हो गईं। भक्तिन का हर बृहस्पतिवार को सिर मुँडवाना चलता रहा। इससे अपनी सुविधा के अनुसार शास्त्र का अर्थ लेने की उसकी प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

**चरण 3: निष्कर्ष** चूड़ाकर्म का अर्थ सिर के बाल मुँडवाना है। लेखिका को स्त्रियों का सिर मुँडवाना अच्छा नहीं लगता था। रोकने पर भक्तिन ने शास्त्र की दुहाई दी और तीर्थ जाने तथा सिद्धि मिलने को सिर मुँडवाने से जोड़ दिया। लेखिका इस कथन का शास्त्रीय स्रोत नहीं जान सकीं और मौन रहीं। इस प्रकार भक्तिन ने अपनी सुविधा के अनुसार शास्त्र का प्रश्न सुलझा लिया।

**त्वरित सुझाव:** पहले चूड़ाकर्म का अर्थ लिखें; फिर आपत्ति, शास्त्रीय तर्क और लेखिका के मौन होने का क्रम रखें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“सूखे के समय इंदर सेना पर पानी डालना कहाँ तक सही है ?” – ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ से उद्धृत इस पंक्ति के संदर्भ में लिखिए कि जीजी ने लेखक के मन की दुविधा का समाधान किस प्रकार किया ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी की व्याख्या लोकविश्वास, दान और त्याग पर आधारित है; उत्तर में उनका दृष्टिकोण समझाना है।
- अभाव के समय दिया गया दान मूल्यवान होता है; किसान का बीज बोना इसी विचार को स्पष्ट करता है।

**चरण 1: लेखक की दुविधा पहचानें** सूखे में पानी बड़ी कठिनाई से मिलता था। लेखक को लगता था कि इंदर सेना के लड़कों पर पानी डालना उसका व्यर्थ नाश है। वह पानी की कमी और वर्षा कराने के इस लोकाचार के बीच तार्किक संबंध नहीं देख पाता था। उत्तर में इस आपत्ति को संक्षेप में स्पष्ट करके जीजी के समाधान तक पहुँचना चाहिए।

**चरण 2: जीजी के उदाहरण का आशय समझें** जीजी ने समझाया कि दान वही महत्वपूर्ण है जो अपने पास कम होने पर भी दिया जाए। त्याग के बिना दान नहीं होता। किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास का अच्छा बीज खेत में डालता है। इसी प्रकार पानी देकर अधिक पानी माँगना लोकविश्वास में वर्षा पाने की आशा से जुड़ा है। इसे वैज्ञानिक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय जीजी की आस्था और उदारता के तर्क के रूप में लिखना चाहिए।

**चरण 3: निष्कर्ष** जीजी ने समझाया कि जिसके पास किसी वस्तु की कमी है, उसका दान ही वास्तविक त्याग है। इंदर सेना को पानी देना इसी भावना का प्रतीक है। जैसे किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपना अच्छा बीज धरती में डालता है, वैसे ही थोड़ा पानी देकर लोग इंद्र से वर्षा माँगते हैं। उन्होंने दान, त्याग और लोकविश्वास से लेखक की दुविधा का समाधान किया।

**त्वरित सुझाव:** जीजी के उत्तर में अभाव, त्याग और किसान के बीज का उदाहरण अवश्य जोड़ें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ में श्रम विभाजन का आधार किसे और क्यों नहीं माना जा सकता ?

[3 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- आबेडकर जाति-प्रथा को केवल काम का बँटवारा नहीं, श्रमिकों का श्रेणीबद्ध विभाजन मानते हैं।
- व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण व्यवसाय-चयन के उचित आधार हैं; जन्म इसका आधार नहीं है।

**चरण 1: अस्वीकार्य आधार स्पष्ट करें** श्रम-विभाजन का आधार जाति अथवा जन्म को नहीं माना जा सकता। जाति-प्रथा व्यक्ति का व्यवसाय उसकी अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार तय नहीं करती। वह माता-पिता की सामाजिक स्थिति के आधार पर पेशा निश्चित कर देती है। इसलिए यह किसी व्यक्ति की वर्तमान दक्षता का निष्पक्ष मूल्यांकन नहीं है।

**चरण 2: हानि और उचित विकल्प समझें** वंशानुगत पेशे की बाध्यता व्यक्ति को पसंद का काम चुनने और बदलती परिस्थितियों में दूसरा व्यवसाय अपनाने से रोकती है। काम में रुचि न होने से कार्यकुशलता भी प्रभावित होती है। उद्योगों और तकनीक में परिवर्तन होने पर पेशा बदलने की स्वतंत्रता आवश्यक है। अतः स्वस्थ श्रम-विभाजन में प्रशिक्षण, अर्जित क्षमता और व्यक्तिगत रुचि को स्थान मिलना चाहिए।

**चरण 3: निष्कर्ष** श्रम-विभाजन का आधार जाति या जन्म नहीं हो सकता। जाति-प्रथा व्यक्ति की योग्यता, रुचि और प्रशिक्षण की उपेक्षा करके माता-पिता की सामाजिक स्थिति से उसका पेशा तय करती है। इससे व्यक्ति अनचाहा काम करने को बाध्य होता है और परिस्थितियाँ बदलने पर व्यवसाय नहीं बदल पाता। फलतः कार्यकुशलता घटती है और बेरोजगारी बढ़ सकती है। उचित आधार व्यक्तिगत क्षमता और स्वतंत्र व्यवसाय-चयन है।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर का केंद्र जन्म बनाम योग्यता रखें और व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता से उसका संबंध बताएँ।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बाज़ार दर्शन’ पाठ में ‘पैसा पावर है’ – लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- पैसा वस्तुएँ खरीदने की क्षमता देता है; इसी क्रयशक्ति के कारण उसे शक्ति कहा गया है।
- बाज़ार का आकर्षण धनवान व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक खरीदने के लिए भी उकसा सकता है।

**चरण 1: कथन का अभिप्राय स्पष्ट करें** लेखक के अनुसार जब में पैसा होने पर व्यक्ति को लगता है कि वह बाज़ार की मनचाही वस्तुएँ खरीद सकता है। वस्तुओं तक पहुँच देने की यही क्षमता पैसे की शक्ति है। यह कथन खरीदने की सामर्थ्य और उससे पैदा होने वाले आत्मविश्वास को स्पष्ट करता है।

**चरण 2: पाठ के संदर्भ से जोड़ें** भरी जेब के साथ मन का खाली होना बाज़ार के जादू को प्रभावी बनाता है। तब व्यक्ति अपनी वास्तविक जरूरत पर ध्यान देने के बजाय पैसे की शक्ति आजमाने लगता है और अनावश्यक वस्तुएँ खरीद सकता है। अतः कथन धन के प्रभाव को बताता है; इसे अनियंत्रित खरीदारी की प्रशंसा नहीं समझना चाहिए।

**चरण 3: निष्कर्ष** पैसा मनुष्य को बाज़ार से मनचाही वस्तुएँ खरीदने की सामर्थ्य देता है। भरी जेब वाला व्यक्ति अपने को शक्तिशाली समझता है और पैसे की शक्ति आजमाने के लिए खरीदारी करता है। इसलिए लेखक ने पैसे को पावर कहा है; उसके प्रभाव में अनावश्यक खरीदारी भी हो सकती है।

**त्वरित सुझाव:** पावर का अर्थ क्रयशक्ति बताते हुए भरी जेब और अनावश्यक खरीदारी का संबंध स्पष्ट करें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के आधार पर लिखिए कि महामारी की त्रासदी झेल रहे लोगों पर ढोल की आवाज़ का क्या प्रभाव पड़ता था ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में महामारी के भय और निराशा के बीच ढोल की ध्वनि जीवन के संघर्ष का प्रतीक बनती है।
- उत्तर में ढोल की आवाज़ का लोगों के मन पर प्रभाव बताना है; इसे बीमारी ठीक करने का साधन नहीं मानना चाहिए।

**चरण 1: प्रसंग और प्रभाव को समझना** गाँव में महामारी और मृत्यु के कारण सन्नाटा तथा भय छाए हुए थे। रात में लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज़ उस सन्नाटे को तोड़ती थी। उसकी थाप सुनकर असहाय लोगों को लगता था कि विपत्ति के बीच भी जीवन का संघर्ष जारी है। यहाँ प्रभाव मुख्यतः मानसिक है।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** महामारी से त्रस्त गाँव में ढोल की आवाज़ भयावह सन्नाटे को तोड़कर लोगों में संजीवनी-शक्ति भर देती थी। निराश और असहाय लोगों को उससे साहस, सात्वना और जीवन-संघर्ष की प्रेरणा मिलती थी। वे मृत्यु के भय के बीच भी संघर्षरत रहने का हौसला पाते थे।

**चरण 3: निष्कर्ष** ढोल की थाप महामारी से पीड़ित लोगों के लिए मानसिक सहारा और जिजीविषा का स्रोत थी।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में भय और निराशा से साहस तथा जिजीविषा की ओर होने वाला मानसिक परिवर्तन स्पष्ट लिखिए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

भक्तिन ने महादेवी वर्मा के जीवन को कैसे प्रभावित किया ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन और महादेवी का संबंध केवल सेविका और स्वामिनी का नहीं, आत्मीय सहचरियों का संबंध है।
- भक्तिन की सेवा, निष्ठा और ग्रामीण संस्कारों का लेखिका की दिनचर्या पर प्रभाव पाठ के आधार पर समझना चाहिए।

**चरण 1: संबंध का आधार स्पष्ट करना** भक्तिन ने लेखिका के भोजन, रहन-सहन और घरेलू व्यवस्था का दायित्व आत्मीय अधिकार के साथ सँभाला। वह केवल आदेश मानने वाली सेविका नहीं थी; अपनी रुचियों और विश्वासों पर अडिग रहकर लेखिका के जीवन में भी उनका स्थान बनाती थी। इसी कारण दोनों का संबंध साधारण नौकरी से आगे बढ़ गया।

**चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर** भक्तिन ने अपनी निष्ठा, सेवा और आत्मीयता से महादेवी के जीवन को प्रभावित किया। उसने लेखिका की दिनचर्या तथा भोजन में ग्रामीण सादगी का समावेश किया। सुख-दुःख में साथ देकर वह सेविका से बढ़कर अभिन्न सहचरी बन गई और लेखिका के जीवन का अनिवार्य अंग हो गई।

**चरण 3: निष्कर्ष** भक्तिन के स्नेह और दृढ़ व्यक्तित्व ने लेखिका की जीवनचर्या तथा भावनात्मक संसार को प्रभावित किया।

**त्वरित सुझाव:** सिर्फ सेवा का उल्लेख न करें; दिनचर्या में परिवर्तन और सेविका से सहचरी बनने का भाव भी जोड़ें।

**12(i).** निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किशनदा की प्रतिच्छाया है’ इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[5 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में किशनदा यशोधर बाबू के मार्गदर्शक और जीवन-मूल्यों के आदर्श हैं।
- चरित्र-चित्रण में कथन के समर्थन के साथ उसकी सीमा भी बतानी चाहिए: यशोधर बाबू का पारिवारिक जीवन किशनदा से अलग है।

**चरण 1: किशनदा के प्रभाव का आधार** यशोधर बाबू अपने शुरुआती शहरी जीवन में किशनदा के स्नेह और मार्गदर्शन से प्रभावित हुए। उन्होंने किशनदा में अनुभवी बड़े और आदर्श जीवन-व्यवहार का रूप देखा। इसलिए बाद में भी वे नई परिस्थितियों को समझते समय मन ही मन सोचते हैं कि किशनदा होते तो क्या करते। यह स्मृति बताती है कि किशनदा उनके निर्णयों का स्थायी मानदंड बन गए हैं।

**चरण 2: समानताओं और अंतर की पहचान** दोनों की जीवन-दृष्टि में सादगी, पुरानी सामाजिक मर्यादाओं के प्रति सम्मान और आत्मीय संबंधों को महत्त्व देने की प्रवृत्ति है। यशोधर बाबू नई पीढ़ी के प्रदर्शन और आधुनिक जीवनशैली को सहज नहीं स्वीकारते। फिर भी उन्हें किशनदा की पूरी नकल कहना उचित नहीं है। किशनदा अविवाहित थे, जबकि यशोधर बाबू गृहस्थ हैं। पत्नी और बच्चों की बदलती अपेक्षाएँ उनके जीवन में ऐसी उलझनें पैदा करती हैं जिनका समाधान केवल पुराने आदर्शों से नहीं हो पाता।

**चरण 3: लगभग 100 शब्दों में तर्कपूर्ण उत्तर** मैं इस कथन से बहुत हद तक सहमत हूँ। किशनदा ने यशोधर बाबू को आरंभिक जीवन में सहारा और मार्गदर्शन दिया था। उनकी सादगी, आत्मीयता और परंपरागत जीवन-मूल्य यशोधर बाबू के व्यक्तित्व में गहराई से बसे हैं। नई परिस्थितियों में वे सोचते हैं कि किशनदा होते तो क्या करते। आधुनिक दिखावे और बदलती पारिवारिक जीवनशैली के प्रति उनका असहज होना इसी प्रभाव को व्यक्त करता है। फिर भी वे पूर्ण प्रतिच्छाया नहीं हैं। किशनदा अविवाहित थे, जबकि यशोधर बाबू पत्नी-बच्चों वाले गृहस्थ हैं। इसलिए उनके आदर्शों और पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच तनाव भी बना रहता है।

**चरण 4: निष्कर्ष** यशोधर बाबू की मूल्य-दृष्टि पर किशनदा की स्पष्ट छाप है, पर भिन्न पारिवारिक परिस्थितियाँ उन्हें स्वतंत्र और अंतर्द्वंद्वग्रस्त व्यक्तित्व भी बनाती हैं।

**त्वरित सुझाव:** कथन पर अपना मत पहले दें, फिर किशनदा के प्रभाव के उदाहरण और अंत में गृहस्थ जीवन का अंतर लिखें।

**12(ii).** निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

कविता-सृजन का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे आया ? ‘जूझ’ पाठ के आधार पर लिखिए।

[5 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- सृजन का आत्मविश्वास अभ्यास, साहित्यिक प्रेरणा और शिक्षक के प्रोत्साहन से विकसित होता है।
- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में पढ़ाई के लिए संघर्ष के साथ कविता के प्रति रुचि का विकास भी दिखाई देता है।

**चरण 1: प्रेरणा का स्रोत पहचानना** उत्तर में पहले न. वा. सौंदलगेकर के अध्यापन का उल्लेख करें। वे कविता को लय, भाव और तन्मयता के साथ पढ़ाते थे। उनके कंठ से कविता सुनकर लेखक को उसके संगीत और भाव-सौंदर्य का अनुभव हुआ। शिक्षक स्वयं भी कविताएँ रचते थे; इसलिए लेखक के सामने कविता केवल पुस्तक का पाठ नहीं, एक जीवंत सृजनात्मक कार्य बन गई।

**चरण 2: आत्मविश्वास बनने की प्रक्रिया समझना** लेखक को लगा कि कवि भी उसके जैसे साधारण मनुष्य होते हैं। वह अपने परिचित खेतों, वातावरण और अनुभवों को कविता का विषय बना सकता है। अकेले में गुनगुनाने, तुक मिलाने और शब्दों को बार-बार सँवारने के अभ्यास से उसकी झिझक घटी। शिक्षक से अपनी रचना पर मार्गदर्शन मिलने पर उसे अपनी अभिव्यक्ति की क्षमता पर भरोसा हुआ। उत्तर में प्रेरणा से अभ्यास और फिर आत्मविश्वास तक का यह क्रम स्पष्ट रखना चाहिए।

**चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर** न. वा. सौंदलगेकर के भावपूर्ण कविता-पाठ ने लेखक के मन में कविता के प्रति आकर्षण जगाया। वे कविता की लय, छंद और भावों को सजीव कर देते थे तथा अपनी रचनाएँ भी सुनाते थे। लेखक ने समझा कि कवि भी उसके जैसे साधारण व्यक्ति होते हैं; इसलिए वह भी अपने अनुभवों को कविता में व्यक्त कर सकता है। खेतों में काम करते समय वह कविताएँ

गुणगुनाता और नई पंक्तियाँ बनाने का अभ्यास करता। वह तुक, शब्द और लय पर विचार करता तथा अपनी रचनाएँ गुरुजी को दिखाता। उनके मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से उसकी झिझक दूर हुई और कविता-सृजन का आत्मविश्वास बढ़ा।

**चरण 4: निष्कर्ष** इस प्रकार सौंदर्यलेखक की प्रेरणा, अपने अनुभवों की पहचान और निरंतर रचना-अभ्यास से लेखक में कवि बनने का आत्मविश्वास विकसित हुआ।

**त्वरित सुझाव:** उत्तर में शिक्षक की प्रेरणा, कवि के सामान्य मनुष्य होने का बोध और स्वयं रचना करने का अभ्यास क्रम से जोड़ें।

**12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :**

**“सिंधु घाटी की सभ्यता सादगी में ही सम्पन्न थी, उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था” – कैसे ?**

[5 अंक]

**हल:**

**अवधारणा:**

- सभ्यता की समृद्धि केवल राजमहलों से नहीं, उसकी नगर-व्यवस्था, शिल्प और सामान्य नागरिकों की जीवन-सुविधाओं से पहचानी जाती है।
- ओम थानवी सिंधु सभ्यता में नागरिक संस्कृति और कलात्मक सादगी को महत्त्व देते हैं।

**चरण 1: कथन का आशय स्पष्ट करना** यहाँ सादगी का अर्थ गरीबी या कला का अभाव नहीं है। कथन का आशय ऐसी विकसित संस्कृति से है जिसमें संपन्नता का उपयोग नागरिक सुविधाओं, उपयोगी वस्तुओं और कलात्मक कौशल में हुआ। किसी शासक की शक्ति दिखाने वाले विराट स्मारकों के स्थान पर व्यवस्थित नगर और संतुलित जीवन इसके प्रमुख प्रमाण हैं।

**चरण 2: पाठ के प्रमाण चुनना** मोहनजोदड़ो की सड़कों, नालियों, कुओं और स्नानागार की व्यवस्था सामूहिक जीवन की उन्नति बताती है। दूसरी ओर वहाँ भव्य राजप्रासादों और मंदिरों का वैसा प्रदर्शन नहीं मिलता जो अन्य प्राचीन सभ्यताओं में राजसत्ता या धर्मसत्ता का प्रभाव जताता है। मुहरें, मृद्भांड, मूर्तियाँ और आभूषण शिल्प-कौशल तथा सौंदर्यबोध के प्रमाण हैं। उत्तर में इन दोनों पक्षों को साथ रखकर ही सादगी और संपन्नता का संबंध सिद्ध होगा।

**चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर** सिंधु घाटी की सभ्यता में समृद्धि का आधार नागरिक जीवन की सुव्यवस्था थी। मोहनजोदड़ो की योजनाबद्ध सड़कें, पक्की नालियाँ, कुएँ और विशाल स्नानागार उन्नत जीवन-दृष्टि के प्रमाण हैं। वहाँ अन्य प्राचीन सभ्यताओं जैसे विशाल राजप्रासाद, भव्य मंदिर अथवा राजसत्ता का आतंक दिखाने वाले स्मारक नहीं मिलते। मुहरों, मृद्भांडों, मूर्तियों और आभूषणों में विकसित कलाबोध दिखाई देता है, किंतु दिखावे की प्रवृत्ति नहीं। वस्तुओं में उपयोगिता और सौंदर्य का संतुलन है। नगर-निर्माण में सामान्य नागरिकों की सुविधाओं को महत्त्व मिला है। इसलिए इसकी संपन्नता शासकीय वैभव के प्रदर्शन में नहीं, सुसंस्कृत और व्यवस्थित सामाजिक जीवन में व्यक्त होती है।

**चरण 4: निष्कर्ष** अतः सिंधु सभ्यता की पहचान नागरिक सुविधाओं, विकसित शिल्प और संयमित सौंदर्यबोध से थी; उसकी समृद्धि में भव्यता का प्रदर्शन प्रधान नहीं था।

**त्वरित सुझाव:** सादगी को निर्धनता न बताएँ; नगर-व्यवस्था और कलाकौशल के उदाहरण देकर आडंबर के अभाव से उसका अंतर स्पष्ट करें।